Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APRIL, 2021, VOL- 8/64

कार्यरत महिलाएँः भूमिका–संघर्ष एवं सामंजस्य

मुकेश चन्द, Ph. D.
एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग), बी0एस0ए0 कॉलेज, मथुरा

Paper Received On: 21 APRIL 2021
Peer Reviewed On: 30 APRIL 2021
Published On: 1 MAY 2021

Abstract

शिक्षित महिलाओं तथा आमतौर पर निर्धन महिलाओं ने धनार्पाजन एवं पारिवारिक सन्तुलन बनाये रखने की इच्छा से घर के बाहर रोजगार करने की आवश्यकता महसूस की। और ऐसा करना उनके लिए आवश्यक भी हैं। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण भारतीय महिलाओं ने तमाम बाधाओं के बाबजूद नई बुलन्दियों को छुआ है। कार्यकारी महिलाओं को अपनी दोहरी भूमिका के कारण अपने पारिवारिक, वेवाहिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने के साथ–साथ उन्हें अपने विद्यालय व कार्यालय के कार्यों का निवर्हन भी करना पडता है। कार्यरत महिलाएँ अपने पारिवारिक जीवन व कार्यक्षेत्र के क्षेत्र में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करती हैं। और उन्हें विभिन्न चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है। फलस्वरूप उनके सामने भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। प्रख्यात पत्रकार राजीव सचान के अनुसार भारतीय कार्यरत महिलाओं ने तमाम वधाओं एवं चुनौतियों के बावजूद भी नई बुलनिदयों को छुआ है और घर के बाहर अपने आपको स्थापित किया है।

पारिभाषित शब्दावलीः कार्यरत महिलाएँ, भूमिका संघर्ष, चुनौतियाँ, तनाव एवं सामंजस्य।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

उद्देश्य– प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिवार की आर्थिक आय वृद्धि के उद्देश्य से मथुरा शहर में कार्यरत विवाहित महिलाओं की वृत्ति का विश्लेषण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया गया है। नगरीय परिवेश में महिलाओं के पारिवारिक जीवन और उससे सम्बद्ध सामाजिक समस्याओं का अध्ययन मौलिक रूप में करने का एक प्रयास है, साथ ही कार्यरत् महिलाओं के दाम्पत्य जीवन के दृष्टिकोण और उन पर आधुनिकता के प्रभाव का विश्लेषण भी किया गया है।

प्रस्तावना–

प्राचीन काल से ही महिलाएँ शिक्षा, धर्म और सामाजिक विकास आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ–साथ समान रूप से भाग लेती रही है। पुरूषों की तुलना में वह किसी प्रकार अनुन्नत नहीं थीं। नववधू गृह की सम्राज्ञी होती थी तथा पति के साथ प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती थी, इस प्रकार वह पुरूषों के समान ही समाज की स्थायी व गौरवशाली अंग थी। वह अत्यन्त ही सुसभ्य

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और सुसंस्कृत होती थी। पारिवारिक और सामाजिक सभी कार्यों का वह निष्ठापूर्वक पालन करती थीं। वह पति के साथ मिलकर गृह के समस्त कार्य सम्पन्न करती थी। संक्षेप में अति प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरूष दोनों यज्ञरूपी रथ के जुड़े हुए दो बैल थे। किन्तु पूर्व मध्यकाल में धीरे–धीरे महिलाओं के सारे अधिकार सीमित कर दिये गये। उसकी स्वच्छदन्ता पर नियन्त्रण लगाने के अतिरिक्त उस पर अनेकों सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक प्रतिबन्ध लगा दिये गये और उसे गृहस्थी के समस्त कार्यों को करने का निर्देश दे दिया गया।

आज के इस भौतिकवादी युग में मँहगाई के कारण आर्थिक बोझ इतना बढ़ गया है कि घर की आवश्यकताओं की पूर्ति एक कमाऊ सदस्य के सहारे ठीक ढंग से नहीं हो पाती है। ऐसे में महिलाओं का यह दायित्व हो जाता है कि वे घर की चारदीवारी से बाहर जाकर धनोपार्जन कर पारिवारिक सन्तुलन बनाये रखने में सहायता करें। फलस्वरूप आज के भारतीय सामाजिक परिवेश में कार्यरत् महिलाओं का योगदान विकास के विभिन्न क्षेत्रों में दृष्टिगत होता है। इन कार्यरत् महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्वतन्त्रता उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों का एक परिणाम होने के साथ–साथ एक साधन भी है। शिक्षित भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे में हाटे का मत है कि, ''उनकी आर्थिक अवस्था और वैयक्तिक सामाजिक स्तरों में गहरे और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।'' जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति भारतीय नारी के बदलते हुए प्रतिमान, जीवन शैली को भी प्रभावित कर रहे हैं।

नारी की समाजिक स्थिति के बदलते हुए प्रतिमान के बारे में श्रीमती देसाई (1957) का अवलोकन है कि अब नारी को न तो मात्र बच्चा पैदा करने की एक मशीन और न ही घर की दासी माना जा सकता है, अपितु आज उसने एक नया स्तर, एक नयी सामाजिक महत्ता प्राप्त करली है। इसी प्रकार प्रो0 दुबे श्यामाचरण (1963) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि, ''समकालीन, भारतीय समाज में नारी की प्रस्थिति और भूमिकाएँ, प्रचलित परम्परागत मान्यताएँ, धीरे–धीरे बदल रही हैं, जिसके लिए आधुनिक शिक्षा तथा व्यवसायिक गतिशीलता एवम् आर्थिक रूचि में परिवर्तन विशेष उत्तरदायी हैं।''

आज भातरीय सामाजिक सांस्कृतिक संरचना में आमूल परिवर्तन आये हैं, आधुनिक समय में न तो मात्र आर्थिक रूप से विवश महिलाऐं ही व्यवसाय में संलग्न हो रही हैं, अपितु ऐसी भी महिलाऐं कार्य करती हुई दिखाई पड़ रही हैं जो एक उपयोगी जीवन व्यतीत करना चाहती हैं तथा साथ ही साथ पारिवारिक आय में वृद्धि करने में भी अग्रसर हो रही हैं। परम्परागत नारी के स्तर एवं सामाजिक महत्ता में परिवर्तन आने के साथ उनके विचार चिन्तन एवं व्यवहार प्रतिमान में भी परिवर्तन हुए हैं। इस परिवर्तन को श्रीमती देसाई (1957) ने अध्ययन में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि, ''पुरूषों के साथ महिलायें भी यह महसूस करने लगीं हैं कि नारी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य केवल प्रेम–विहार करने, पति के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहने, बच्चों को जन्म देने, गृहस्थी सम्भालने तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु नारी जीवन का उद्देश्य इससे कहीं ऊँचा एवं विस्तृत हैं।'' शिक्षित कामकाजी महिलाओं की संख्या

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में उत्तरोत्तर हो रही वृद्धि इस बात का परिचायक है कि वे आर्थक रूप से अभिप्रेरित होकर व्यवसाय में संलग्न हो रही है। श्रीमती रास (1963) ने अपने अध्ययन में व्यक्त किया है कि ''निःसन्देह इतनी संख्या में विवाहित मध्यमवर्गीय हिन्दू महिलाअें का बिना निरोध के नौकरी में आने के मुख्य प्रेरक आर्थिक तत्व हैं।'' कपाड़ियाः श्रीमती रास के उपर्युक्त कथन से सहमत हैं। वर्तमान समय में कार्यरत महिलाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या उनकी भूमिका के यथोचित तादात्म्य की है, जिसके अभाव में पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत असन्तुलन में द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस सम्बन्ध में नाथ और हॉफमेन अपने अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि व्यवसाय में संलग्न महिलाओं का उनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। हॉफमेन एवं वेस्ट (1964) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह पता लगाया कि, कामकाजी महिलाओं में तलाक की दर गैर कामकाजी महिलाओं की तुलना में ऊँची है।

प्रस्तुत अध्ययन में मथुरा शहर के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् विवाहित हिन्दू महिलाओं को लिया गया है जिनकी आयु 30 वर्ष से ऊपर या 30 वर्ष थी, साथ ही उनकी सम्पूर्ण पारिवारिक औसत मासिक आय लगभग 30000/- रूपये से अधिक न थी। इस प्रकार के उत्तरदाताओं की संख्या 50 थी। विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से अध्यापिकाओं का चयन उनकी शिक्षा, आयु, आर्थिक पृष्ठभूमि और कार्यविधि के आधार पर उद्देश्यपरक निदर्शन के अनुसार किया गया है, तथा निम्नलिखित उपकल्पनाओं की स्थापना करके प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

1. कार्यरत् महिलाओं में परिवार के साथ पूर्ण सामन्जस्य का अभाव है।
2. कार्यरत् विवाहित महिलाओं का जीवन के प्रति दृष्टिाकेण एवम् उन्मेष अन्य महिलाओं की अपेक्षा उच्च होता है।
3. कार्यरत् महिलाएँ सामाजिक परिवेश में पूर्ण स्वतंत्रता चाहती हैं।
4. कार्य स्थल पर व्यवस्था महिलाओं के पारिवारिक सामंजस्य एवं भूमिका का निर्वहन में प्रमुख बाधक कारक है।

कार्यरत् महिलाओं का नौकरी चयन :-

आधुनिक समय में घर की वित्तीय दशा सुधारने में केवल पुरूषों का ही हाथ नहीं है और न ही केवल एक व्यक्ति के धनोपार्जन करने से घर की विभिनन आवश्यकताओं की पूर्ति ही सम्भव है, इस सम्बन्ध में ''निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्ति को कार्य करने की इच्दा उन रूपयों के कारण ही होती है, जो उसे कार्य करने हेतु प्रदान किये जाते हैं'' व्यक्ति के जीवन के अस्तित्व और स्तर को बनाये रखने वाली समस्त उपयोगी वस्तुओं को रूपयों के द्वारा ही खरीदा या प्राप्त किया जा सकता है। अतः आज महिलाएँ भी धनोपार्जन हेतु पुरूषें के साथ व्यवसाय करने के लिए कदम मिलाकर चल रही हैं, क्योंकि वह जानती हैं कि व्यवसाय व्यक्ति के आर्थिक जीवन का निर्धारण करता है और

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उनके नौकरी करने से घर की आय वृद्धि में कुछ सहयोग अवश्य होगा। कार्यरत् महिलाओं का नौकरी के प्रति उन्मेष को सारिणी नं0 1 में प्रदर्शित किया गया है।

सारिणी संख्या (1) विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् विवाहित महिलाओं का नौकरी के प्रति उन्मेषः–

कार्य का उद्देश्य		संख्या	प्रतिशत
1.	घर की आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु	35	70.00
2.	समय का सदुपयोग करने हेतु	07	14.00
3.	समाज में उत्तम प्रस्थिति प्राप्त करने हेतु	05	10.00
4.	व्यक्तिगत अभिरूचि एवं अन्य कारण	03	0600
योग	.	**50**	**100.00**

सारिणी संख्या 1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 70 प्रतिशत महिलाएँ घर की आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु नौकरी कार्य में संलग्न थी। 14 प्रतिशत महिलाएँ समय का सदुपयोग करने के लिए नौकरी करती हैं तथा 10 प्रतिशत महिलाएँ समाज में उत्तम प्रस्थिति प्राप्त करने के उद्देश्य से नौकरी करती हैं तथा शेष 6 प्रतिशत महिलाएँ व्यक्गित अभिरूचि एवं अन्य कारणों से नौकरी में संलग्न थीं।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये पति के साथ ही धनोपार्जन करने वाली महिलाओं की संख्या सवाधिक है।

कार्यरत् महिलाएँ एवं पारिवारिक सामंजस्य–

कार्यरत महिलाओं का कार्य संस्थान के प्रति ईमानदारी से अपने दायित्वों को पूरा करना एक पारिवारिक समस्या का रूप ले लेता है, क्योंकि कार्य पर जाने के बाद इन महिलाओं को गृह कार्य के लिये यथेष्ट समय नहीं मिल पाता हैं। पुरूष जब ऑफिस से आते हैं तो महिलाएँ थकान मिटाने के लिये चाय नाश्ता आदि हाजिर करती है, किन्तु जब महिलाएँ ऑफिस से लौटती हैं तो चाय नाश्ता तो दूर की बात है, उल्टे वीर सैनिक की भॉति अपने घरेलू कार्यों में जुट जाती हैं, इसके बाबजूद घर के अन्य सदस्य जैसे पति, सास, ससुर, नन्द आदि की यह अपेक्षा होती है कि वह सबकी सुख–सुविधा का ख्याल रखें। एक अकेले व्यक्ति के लिये यह कदापि सम्भव नहीं है कि वह सब कार्य बिना किसी भूल–चूक के कर सके, इसलिए कार्यरत महिलाओं को प्रमुख रूप से वस्त्रों की धुलाई, बर्तनों की सफाई, खाना बनाना तथा उनकी अनुपस्थिति में बच्चों की देख–रेख के लिये नौकरानी की सेवायें लेना आवश्यक हो जाता है। जिन महिलाओं के यहाँ नौकरानी रखना कठिन होता है उनके यहाँ प्रायः संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अध्ययन किये गये परिवारों में कार्य करने के विवरण को सारिणी सं0 2 में रखकर प्रस्तुत किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारिणी संख्या (2) चयनित परिवारों में स्वयं किये जाने वाले, नौकरों द्वारा किये जाने वाले कार्यों का विवरणः—

कार्य	नौकरों द्वारा किये जाते हैं (संख्या)	(प्रतिशत)	स्वयं करने पड़ते हैं (संख्या)	(प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
वस्त्रों की धुलाई	15	30.00	35	70.00	50 (100.00)
बर्तनों की सफाई	40	80.00	10	20.00	50 (100.00)
भोजन बनाना	05	10.00	45	90.00	50 (100.00)
बच्चों की देखभाल करना।	02	04.00	48	96.00	50 (100.00)

उपर्युक्त सारिणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता बर्तनों की सफाई के लिये ही महरी रखने में समर्थ थीं। कुछ महिलाएँ ही भोजन बनाने के लिये एवं बच्चों की देख—रेख करने के लिये नौकर लगा सकती थीं जबकि अधिकांश उत्तरदाताओं को यह कार्य स्वयं करने पड़ते थे। वस्त्रों की धुलाई के लिये भी सभी महिलाएँ नौकरी की सेवा प्राप्त करने में असमर्थ थी। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त गृह कार्यों में यथेष्ट समय देने के पश्चात इन महिलाओं को भी अपनी कार्य संख्या के प्रति भी उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है। फलस्वरूप इन विभिनन दो भूमिकाओं में उचित सामंजस्य नहीं हो पाता है और भूमिका द्वन्द्व हो जाना स्वाभाविक हो जाता है।

गृह कार्य में पुरूषों के समान योगदान की भावना
एवं कार्यरत् महिलाओं की मनोवृत्ति

परिवार की सुख समृद्धि में स्त्री—पुरूष दोनों का समान हाथ है। घर के कार्य, घर की सुव्यावस्था एवम् शान्ति बनाये रखना केवल स्त्रियों का ही दायित्व न होकर, पुरूषों के भी उत्तरदायित्व का विषय है। घर की सुव्यवस्था पारिवारिक सदस्यों के श्रम—विभाजन पर निर्भर करती है। यदि स्त्री घर के सभी कार्यों को करने के बाद पुरूष के साथ धनोपार्जन का प्रयास करती है, तो क्या पुरूष अपनी परम्परागत उच्चता की भवना एवं मिथ्या अहं को त्यागकर स्त्री के साथ गृह कार्य में मित्रवत सहयोग नहीं दे सकता। अधिकांश महिला इस पक्ष में थी कि पुरूषों को भी सहयोग देना चाहिये। इस प्रश्न के उत्तर में ''क्या वे अपने पति से गृह कार्य में सहयोग की आशा करके उनके ऊपर अनुचित दबाब नहीं डाल रही हैं, जबकि अन्य व्यक्ति कार्यालय एवं व्यवसाय स्तर से लौटने के पश्चात् आराम करते हैं या कुछ ऐसे काम करने के लिए विवश होते हैं जिनके करने से उनके व्यक्तित्व का विकास होता है।''

इस सम्बन्ध में महिलाओं के दृष्टिकोण को सारिणी संख्या 3 में रखकर प्रस्तुत किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारिणी संख्या (3) गृह कार्य में पुरूषों के योगदान के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण—

गृह कार्य में पुरूषों के समान योगदान के सम्बन्ध में अन्तर	पक्ष में संख्या (प्रतिशत)	विपक्ष में संख्या (प्रतिशत)	योग (प्रतिशत)
1. आपके पति गृह कार्य में आपका सहयोग देते हैं।	9 (18.00)	41 (82.00)	50 (100.00)
2. आहर कार्य करने के बाद घर वापिस आने पर अत्यधिक थकान के कारण आपको गृह कार्य में पति का सहयोग चाहिये।	47 (94.00)	03 (06.00)	50 (100.00)
3. गृह कार्य में यथेष्ट समय न मिल पाने पर आपको पति का सहयोग लेना आवश्यक हो जाता है।	40 (80.00)	10 (20.00)	50 (100.00)
4. पुरूष स्त्री का स्वामी ही नहीं वरन् उसका सहयोगी अर्थात् मित्र भी है।	35 (70.00)	15(30.00)	50 (100.00)

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि गृह कार्य में पुरूषों के सहयोग की अभिलाषा में महिलाएँ अत्यधिक थक जाती है तथा घर और बाहर जाकर कार्य करने के दोहरे उत्तरदायित्व के कारण उन्हें समुचित आराम का अवसर भी नहीं मिल पाता था। उन्हें विद्यालय जाने से पूर्व ही गृह कार्य करने पड़ते थे तथा छूटे हुये बहुत से अधूरे कार्य विद्यालय से वापिस आकर करने पड़ते थे। अतः उनका अत्यधिक थक जाना स्वाभाविक था। दूसरी ओर उनके पास समस्त गृह कार्य करने के लिये समय का अभाव भी था। एक ही समय में घर की व्यवस्था करना तथा विद्यालय की तैयारी करना सम्भव नहीं हो पाता था। पुरूषों को अपना स्वामी न मानकर एक मित्र की भाँति मानने की भावना भी इन महिलाओं में प्रबल रूप से परिलक्षित होती है।

कार्यरत महिलाएँ एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्वः—

प्रत्येक संस्था अपने सदस्यों से यह उपेक्षा करती है, कि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करें करें। विशेषकर ऐसी संस्था जो अपने सदस्यों को उनके कार्य के बदले धन भी देते हैं अर्थात् उन्हें अपने यहाँ व्यवसाय भी देती है, यह कभी भी सहन नहीं कर सकती कि वे अपनी भूमिका भली—भाँति पूरी न करें। साथ ही साथ कार्यरत् महिलाओं का यह नैतिक दायित्व भी होता है कि वह अपने कार्य तथा संस्था के प्रति ईमानदारी से कार्य करें। लेकिन कभी—कभी ये कार्यरत् महिलाएँ अपने उत्तरदयित्व को समझते हुये भी अपना कार्य सन्तोषजनक तरीके से करने का प्रयास करती हैं किन्तु परिवार व नौकरी के प्रति दोहरी नैतिक कर्तव्य भावना के कारण भूमिका संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। इसका मुख्य कारण उनका मातृत्व अवकाश लेना, बच्चों की बीमारी, पति का अधिक स्नेह देना या उपेक्षित करना, गृह कार्यों की अधिकता तथा उनका स्वतः अस्वस्थ रहना है।

इस उत्तरदाताओं के द्वारा लिये गये अवकाश के विवरण को सारिणी संख्या 4 में रखकर प्रस्तुत किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारिणी संख्या (4) महिला उत्तरदाताओं के द्वारा लिये गये अवकाश के प्रमुख कारण–

अवकाश लेने के प्रमुख कारण	संख्या	प्रतिशत
1. बच्चों की बीमारी	28	56.00
2. पति का अधिक स्नेह व उपेक्षा	05	10.00
3. विवाह तथा सामाजिक रीति–रिवाजों में भाग लेना।	08	16.00
4. गृह कार्यों की अधिकता।		
5. स्वयं की अस्वस्थता	03	06.00
	06	12.00

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि इन कार्यरत महिलाओं द्वारा सर्वाधिक अवकाश बच्चों की बीमारी के समय लिये जाते हैं। इस सम्बन्ध में उनका मत था कि बच्चों की बीमारी में उनकी देखभाल करना स्त्रियों का नैतिक दायित्व है वस्तुतः स्वभाव से अधिक स्नेहशील होने के कारण बीमारी की हालत में उनके बच्चों की देखभाल माँ के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता है। अन्य अवसरों पर इन महिलाओं द्वारा लिये गये अवकाशों में विवाह तथा सामाजिक रीति–रिवाजों में भाग लेने के लिये, लिये गये अवकाश सर्वाधिक हैं।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य उपलब्धियों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः–

1. अधिकांश कार्यरत महिलाएँ घर की आर्थिक आय में वृद्धि हेतु कार्य करती हैं।
2. इससे उनकी आर्थिक स्वतन्त्रता में वृद्धि होने के साथ ही परिवार के लिए आवश्यक साधनों को प्राप्त करने में समुचित सहायता मिलती है।
3. कार्यरत् महिलाओं में पति के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण का अभाव पाया जाता है तथा वे पति को सहगामी के रूप में देखती हैं एवम् उनसे घर के कार्यों में हाथ बँटाने की अपेक्षा करती हैं।
4. कार्यरत रहने के कारण गृह कार्य के लिये समुचित समय न मिल पाने के कारण उनका पारिवारिक जीवन कभी–कभी विवादस्पद एवं संटकमय हो जाता है।
5. समयाभाव के कारण वे अपने बच्चों की समुचित देखभाल नहीं कर पाती है।
6. कार्यरत इन महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावनाओं की प्रबलता होती है।

इसके अतिरिक्त आज भी कार्यरत अधिकांश महिलाएँ परम्परागत सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आधुनिक मूल्यों, आदर्शों, दायित्वों और जीवन, शैली के समन्वयात्मक पक्ष की समर्थक है। पारिवारिक संरचना में महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका का केन्द्रीय स्थान होता है, महिलाओं की केन्द्रीय स्थिति एवम् भूमिका में परिवर्तन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सम्पूर्ण पारिवारिक संरचना तथा साथ ही साहा सामाजिक एवम् सांस्कृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत विशिष्ट परिवर्तन हुये हैं। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप कार्यरत महिलाएँ यह महसूस करती हैं कि विधि भूमिका पुंजों के कारण उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति में असंतुलन उत्पन्न हुआ है, फिर भी भूमिका द्वन्द्व की इन चुनौतियों का

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए इन महिलाओं ने न तो परम्परागत मूल्यों एवं आदर्शों का तिरस्कार किया है और न ही आधुनिक, पाश्चात्य स्वच्छन्दतावादी तथा व्यक्तिवादी जीवन शैली को ही अपनाया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

समाचार पत्रः दैनिक अमर उजाला

देसाई नीराः बूमेन इन मॉडर्न इण्डिया, बोहरा एण्ड सन्स बाम्बे 1957.

दुबे एस0सी0, मैन एण्ड बूमेन्स रोल इन इण्डिया, यूनेस्को 1963, 2002

रास ए0डी0, दि हिन्दू फेमिली इन इट्स अर्वन सैटिंग, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस 1963.

नई एण्ड हॉफमेन, मैरिटल इन्टरेक्शन : दि एम्प्लाइड मदर्स इन अमेरिका, कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1964.

श्रीनिवास के0एन0, वूमेन एण्ड डेवलपमेण्ट प्लानिंग, विकास पब्लिसर्स दिल्ली 1988.

समाजशास्त्र गुप्ता एवं शर्मा, सहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies